Year-8; Sept. 2017
ISSN–2231-1130
UGC Sr. No. – 48398
VEETHIKA

बेनजीर भुट्टो ने पिता से ली प्रेरणा

निशा बहादुर*

जुल्फिकार अली भुट्टो अपनी बेटी से बहुत प्यार करते थे। एक पुरूष प्रधान समाज में पुत्र को पुत्री की अपेक्षा ज्यादा महत्व दिया जाता है। किन्तु बेनजीर के पिता के भीतर ऐसा कोई भेदभाव नहीं था। वे चाहते थे कि बेनजीर अपने परिवार के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करें और इस भेदभाव को मिटाये। बेनजीर ने लिखा है कि हमारे घर में पढ़ाई सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती थी, मेरे पिता के भी पहले, उनके पिता के समय से मेरे पिता चाहते थे कि वह आने वाली पीढ़ी को पढ़े–लिखे प्रगतिशील पाकिस्तानियों की पौध सौंपे। अपने इन सपनो को पूरा करने के लिए उन्होंने बेनजीर को तीन साल की उम्र में लेडी जेनिंग नर्सरी स्कूल में नाम लिखा दिया था। मेरे आर्क्सफोर्ड से शुरूआती तीन वर्ष राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र और दर्शनशास्त्र पढ़ने में बीत गये। यहाँ मुझे प्रति सप्ताह दो आलेख अपने राजनीति शास्त्र, दर्शनशास्त्र, अर्थशास्त्र के लिए देने पड़ते थे। मेरे पिता की राय थी कि मुझे आर्क्सफोर्ड की यूनियन में हिस्सा लेना भी शुरू करना चाहिए।

आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में पढ़ाई के दौरान 1973 को जब वह अपने पिता के साथ यू0एस0 यात्रा पर गयी जहाँ व्हाइट हाउस के भोज में उनकी मुलाकात राष्ट्रपति निक्सन और उनके सचिव हेनरी किंसीगर से हुई। किंसीगर बेनजीर भुट्टो के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुई। खाने के टेबल पर उन्होंने बेनजीर से बात की और जुल्फिकार से कहा कि माननीय प्रधानमंत्री जी आपकी बेटी आपसे ज्यादा डरती है। अपनी यात्रा के विषय में बेनजीर भुट्टो लिखती हैं कि, मैं केवल चार वर्ष की थी और मेरे पिता अट्ठाइस वर्ष के जब उन्हें प्रेसिडेन्ट इस्कंदर मिर्जा ने संयुक्त राष्ट्र संघ में भेजा। उसके बाद मेरे पिता वाणिज्य मंत्री रहे और बाद में अयूब खान की सरकार में ऊर्जा मंत्री और विदेश मंत्री रहे और पाकिस्तान के प्रतिनिधि मण्डल के नेता बनकर सात सालों तक कई बार संयुक्त राष्ट्र संघ में आते–जाते रहे। इस दौरान मेरी माँ और मेरे पिता को अक्सर एक–दूसरे से दूर रहना। इस प्रकार के अनुभवों से वह आक्सफोर्ड की सबसे लोकप्रिय छात्रा के रूप में उभरी, उन्हें भाषणों में ज्यादा आनन्द आता था। उनके इस शौक को ज्यादा औपचारिक रूप आक्सफोर्ड में मिला। आक्सफोर्ड यूनियन डिवोटिंग सोसाइटी जो कि 1823 ई0 बनी थी, जो कि ब्रिटिश हाउस ऑफ कामन्स की तरह थी। जिसे भविष्य के राजनेताओं का प्रशिक्षण केन्द्र कहा जाता था। वह अपने पिता के आग्रह पर इस सोसाइटी में शामिल हुई तथा वह इस सोसाइटी की कोशाध्यक्ष भी थी।

बेनजीर भुट्टो को राजनीति में कोई विशेष रूचि नहीं थी। लेकिन उनके पिता चाहते थे कि वह राजनीति में शामिल हो। उनके पिता जी ने कहा कि तुम्हे पाकिस्तान की राजनीति के बारे में जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। इसके लिए तुम्हें मेरे ऑफिस के कार्यो में अगले 6 महीने तक मेरी मद्द करो, यदि तुम्हें अच्छा लगे तो ठीक नहीं तो तुम्हें विदेश सेवा में जाने की तैयारी करनी चाहिए।

हावर्ड से आने के बाद व आक्सफोर्ड जाने से पहले बेनजीर पाकिस्तान अपनी गर्मियो की छुट्टियाँ बिताने माता–पिता के पास आयी, और वह पुनः अपने पिता के साथ कई यूरोपीय देशों की अधिकारिक यात्रा पर भी गयी। जो कि बेनजीर के लिए बहुत ही अच्छा अनुभव था। 14 अगस्त 1975 को जब पाकिस्तान का नया संविधान लागू हुआ तो उस समय बेनजीर पाकिस्तान में ही मौजूद थीं।

मेरे पिता ने बचपन में हमें सुनायी हुई कहानियों में बार–बार यही बताया था, सच की झूठ पर, अच्छाई की बुराई पर हमेशा जीत होती है।

''तुम चाहे किसी कारगर मौके को पकड़ लो या उसे दूर खो जाने दो, तुम प्रेरणा से भरे रहो या संशय से घिर जाओ, तुम अपनो मनोबल भरपूर ऊँचा रखो, या झुकते चले जाओ, यह तुम्हें खुद तय करना है।'' उन्होंने हमें हमेशा यही बताया कि इंसान अपनी नियति, अपना भाग्य खुद तय करता है।

* पाश्चात्य इतिहास विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

मेरे पिता ने मुझे उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजा और अमेरिका के प्रमुख विश्वविद्यालय, हावर्ड कॉलेज में प्रवेश कराया। मेरे सम्पूर्ण जीवन, यहाँ तक कि आध्यात्मिक रूप से मुझे निर्देशित एवं ने प्रोत्साहित किया। उन्होंने मेरे गुरू का काम किया और मुझे शक्ति दी। अपना विचार व्यक्त करने के लिए आत्मविश्वास दिया। मेरे जीवन में वे सबसे बड़े मॉडल थे।

बेनजीर भुट्टो लिखती हैं कि मेरे पिता ने हमेशा मेरा हौसला बढ़ाया कि मैं किसी बड़ी दुनिया को अपने लिए महसूस करूँ, हालाँकि कभी–कभी उनकी बातें मुझे बिल्कुल समझ में नहीं आती थीं। 1963 में एक बार मैं उनके साथ विदेश मंत्री के निजी रेलवे कोच में जा रही थीं। सर्दियों का मौसम था, कि उन्होंने मुझे सोते से जगा दिया। 'यह सोने का समय नहीं है।' उन्होंने हड़बड़ाहट में कहा। 'एक बड़ा हादसा हो गया हैं अमेरिका के नौजवान राष्ट्रपति को गोली मार दी गई है।' हालाँकि मैं उस समय बस, दस बरस की थी और मैंने अमेरिका के राष्ट्रपति के बारे में बस ज़रा–बहुत सुना ही था।, मेरे पिता ने मुझे एकदम अपने पास बैठा लिया और वह अन्तिम बुलेटिन सुना, जिसमें जॉन एफ0 कैनेडी के बारे में बताया जा रहा था। मेरे पिता कैनेडी से कई बार व्हाइट हाउस में मिल चुके थे और वह उनके उदार सामाजिक विचारों के प्रशंसक थे। अक्सर वह मुझे और मेरे भाई–बहनों को पाकिस्तान आए विदेशी प्रतिनिधिमंडल से मिलवाने ले जाते थे। एक बार उन्होंने कहा कि हमें चीन से आए किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से मिलने जाना है, मैं बहुत खुश हो गई। मेरे पिता ने अक्सर चीन की क्रांति तथा उसके नेता माओ–त्से–तुंग की तारीफ की थी कि उन्होंने कैसे पुराने शासन को हटा फेंकने के लिए एड़ी–चोटी का जोर लगा दिया था। मैं मान रही थी कि हम माओ से मिलने जा रहे हैं, जिनकी निजी टोपी, जो उन चीनी क्रांतिकारी नेता ने मेरे पिता को भेंट की थी, अब भी मेरे पिता के पास सँजो कर रखी है। उस मौके के लिए मैंने वह ड्रेस पहनी, जो मेरे पिता सॉक्स, फिफ्थ एवेन्यू, न्यूयार्क से लाए थे, जहाँ की सेल्स लेडी के पास हमारे कपड़ो की नाप वगैरह पहले से ही दी हुई है। मुझे बेहद निराशा हुई, जब वह चीनी प्रतिनिधि माओ नहीं थे, बल्कि हम चाऊ–एन–लाई से मिलने पहुँचे थे, जिनके साथ उनके दो मंत्री, चेन–यी और लीऊ–शाओ–ची थे।

बेनजीर भुट्टो पिता को अपना राजनीतिक गुरू मानती हैं। मरी में रहने के दौरान उनके पिता ने सनम और बेनजीर की राजनीतिक शिक्षा डाक के द्वारा जारी रखी। जकार्ता से गुटनिरपेक्ष देशों के सम्मेलन से वापस आते ही उन्होंने हमें एक लम्बा ख़त लिखा, और बताया कि संयुक्त राष्ट्र संघ में महाशक्तिशाली राष्ट्रो के स्वार्थी रवैये की चर्चा उठाई गई, जिसकी वजह से तीसरी दुनिया के देशों की उपेक्षा हो रही है।

बेनजीर भुट्टो की अपने पिता से राजनीतिक चर्चाएँ होती, ऐसी ही एक चर्चा पर प्रकाश डालते हुए वे स्वयं लिखती हैं कि 'क्या तुम्हे लगता है कि संयुक्त राष्ट्र संघ में हमें न्याय मिलेगा?' जब हम न्यूयार्क में मिले तो पापा ने पूछा। क्यों नहीं, पापा... 'मैंने अपने बठारह बरस के अनुभव को सामने रखकर उत्तर दिया, 'इससे कोई भी इनकार नहीं कर सकता है कि हिन्दुस्तान ने अन्तरराष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन करते हुए दूसरे देश पर हमला किया है और उस पर कब्ज़ा कर लिया है।'

तुम सोचती हो कि सुरक्षा परिषद्, हिन्दुस्तान की दलीलों को खारिज करते हुए उससे कहेगी कि वह अपनी फौजें हटा ले?' 'वह कैसे नहीं फौजें हटाएँगे?' मैंने उत्तर दिया, 'ऐसे चुपचाप बैठे रह जाना तो उस अन्तरराष्ट्रीय शान्ति रखने वाली संस्था के लिए अपना महौल बनाना हो जाएगा, जबकि हज़ारों लोग मौत के घाट उतारे जा रहे हैं और मुल्क– छिन्न–भिन्न हो रहा है।' 'पिंकी, तुम अन्तरराष्ट्रीय कानून की बहुत अच्छी छात्र हो। हावर्ड के छात्र से कैसे मतभेद रख सकता हूँ' उन्होंने हँसते हुए जवाब दिया, 'लेकिन तुम ताकत की राजनीति कभी नहीं समझती हो।

28 जून 1972ई0 के अपरान्ह पाकिस्तान के राष्ट्रपति जुल्फिकार अली भुट्टो की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधि मण्डल भारत पहुँचा। भारतीय प्रतिनिधि मण्डल की अध्यक्षता प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गाँधी कर रही थीं, भारत प्रतिनिधि मण्डल में

डी0वी0 धर, पी0एन0 धर, एस0के बेनर्जी, एस0एस0 सिन्धी, पी0एन0 हक्सर, पी0एन0कौल, अशोक चिब शामिल थे।

पाकिस्तान प्रतिनिधि मण्डल राष्ट्रपति जुल्फिकार अली भुट्टो, के अलावा बेनजीर भुट्टो, गुलाम मुस्तफा जैतोई, अरबाव सिकन्दर खॉ, हयात मोहम्मद शेरपाओं, मेराज मोहम्मद खालिद और अजीज अहमद सम्मिलित थे। हिन्दुस्तान में चण्डीगढ़ की भूमि पर मेरे पिता एक वरिष्ठ प्रतिनिधि मण्डल के साथ बुझे हुए से बैठे थे और कह रहे थे, ''क्या शिमला हम दो देशों के बीच सहजता ला पायेंगे? क्या हम भारत के साथ शान्ति बना पायेंगे? या हमारे देश का अब अन्त आ गया है। राष्ट्रपति भुट्टो बेनजीर को समझाते हैं कि हर कोई इन सवालों के संकेत खोजने के चक्कर में रहेगा कि मीटिंग कैसी चल रही है इसलिए तुम बहुत होशियार रहना। तुम हँसना–मुस्कराना मत, क्योंकि कहीं यह न लगे, कि हमारे फौजी तो हिन्दुस्तानी जेल में सड़ रहे और हम मजे लूट रहे हैं– और तुम उदास चेहरा भी मत बनाकर रखना... क्योंकि यह न लगे कि हम मन में कोई उम्मीद न रखते है और किसी को यह मौका भी कहने को नहीं मिलना चाहिए कि उनका चेहरा तो देखो... जरूर मीटिंग नाकामयाब हो रही है।... बेनजीर ने पूछा कि मुझे कैसा दिखना चाहिए तो राष्ट्रपति भुट्टो ने जवाब दिया कि न तो बहुत खुश दिखो, न ही एक दम गमगीना बेनजीर ने सोचा कि यह तो बड़ा मुश्किल काम है कि हमेशा चेहरे पर तटस्थता का भाव बनाये रखा जाये। लेकिन यह मेरे पिताजी के लिए मुश्किल नहीं थी। हम सब चण्डीगढ़ से हेलीकॉप्टर में बैठकर शिमला गये। शिमला में जगह–जगह कैमरे लगे थे और हमारा स्वागत करने के लिए प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी मौजूद थीं। अस्सलामालेकुम बेनजीर ने उन्हें मुस्लिम तहजीब के हिसाब से अभिवादन किया। इन्दिरा गाँधी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया ''नमस्ते''। मैंने भी उन्हें वैसा ही भाव दिखाया। शिमला बातचीत की पहली बैठक भारत की प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी के अभिनन्दन से शुरू हुई। उन्होंने कहा कि दोनों पक्षों की बातचीत के लिए मिलना आसान नहीं था। राष्ट्रपति भुट्टो ने कहा कि ''हम शान्ति चाहते हैं। यही हमारा मकसद भी है और हम इसके लिए पूरी कोशिश भी करेंगे। हम एक नया मोड़ लेंगे। हम एक नई शुरूआत करना चाहते हैं।

अगले पाँच दिन मेरे पिता तथा दूसरे लोग, जो पाकिस्तानी प्रतिनिधिमण्डल में शामिल थे भावात्मक ऊहापोह से गुज़रते रहे। ''बातें तो ठीक चल रही हैं...''एक प्रतिनिधि ने मुझे पहले सत्र के बीच में बताया। उसी शाम दूसरे को विचार मुझ तक आया कि अच्छा नहीं हो रहा है। अगला दिन और भी अनिश्चित–सा रहा आशा–निराशा की धूप–छाँह चलती रही। अपनी मज़बूत स्थिति में बैठीं इन्दिरा गाँधी एक समूचे निर्णायक फैसले पर पहुँचना चाहती थीं जिसमें कश्मीर का विवादित हिस्सा भी था। पाकिस्तानी प्रतिनिधिमण्डल चाहता था कि एक–एक मुद्दे पर अलग–अलग फैसले लिए जाएँ, जैसे सरहद के मामले, युद्धबन्दियों के मामले और कश्मीर विवाद... कोई भी विश्वासघात जैसा निर्णय पाकिस्तान की जनता को स्वीकार नहीं होगा और किसी नई लड़ाई का कारण बनेगा।

लेकिन जब समझौते की वार्ता एक अटकाव में फँस गई, तब सड़कों पर एक अजीब–सी बात देखने में आई। जब भी मैं हिमाचल भवन से आती–जाती, जो कि कभी ब्रिटिश राज में पंजाब के गर्वनर का आवास था और जहाँ हम ठहरे हुए थे, चहकते हुए लोगों की भीड़ लग जाती। वह उधर ही आते, जिधर मैं जाती... पुराने काटेज के आस–पास, बगीचों में पेड़ो के इर्द–गिर्द, सब जगह। जब मैं 'माल' पर टहलने निकलती, जहाँ अँग्रेजों के अधिकारी कभी अपनी पत्नियों के साथ घूमने जाते थे, वहाँ मेरे निकलने से इतनी भीड़ जमा हो जाती कि ट्रैफिक को रोकना पड़ता। यह मेरे लिए असुविधाजनक था... ऐसा मैंने क्या किया है, जो मैं इतने लोगों का ध्यान खींच रही हूँ।

तार और पत्रों का अम्बार लग गया, जिसमें हिन्दुस्तान में मेरा स्वागत किया गया था। किसी ने सलाह दी कि मेरे पिता को मुझे भारत में पाकिस्तान का राजदूत नियुक्त कर देना चाहिए। पत्रकारों और फीचर लेखकों ने मुझे घेर लिया और मेरे इण्टरव्यू लिए तथा मुझे ऑल इण्डिया रेडियों पर वार्ता के लिए बुलाया गया। मैं खीझ उठी कि मेरे कपड़े जैसे

राष्ट्रीय का विषय बन गया। मुझे इस बात से अजीब लग रहा था कि वह कपड़े सारे, सामिया की बहन से माँगे हुए थे, और मेरा वार्डरोब भी अनौपचारिक कमीज़ों, जीन्स, स्वेटर्स वगैरह से भरा हुआ था, मेरे लिए कपड़ों का सवाल बेमानी था। मैं अपने को हावर्ड की एक प्रबुद्ध लड़की जादा समझती थी, जिसका दिमाग दुनिया की बड़ी, युद्ध और शान्ति की समस्याओं से जूझता रहता था। लेकिन प्रेस वाले मुझसे फिर कपड़ो के बारे में ही पूछे जा रहे थे। फैशन मेरे लिए केवल लोगों के मनबहलाव की चीज़ थी और ऐसा मैंने एक इण्टरव्यू लेने वाले से कह भी दिया, लेकिन अगले ही दिन मैं फिर फैशन की ही राह पर खड़ी दिखाई गई थी। मेरे पिता, तथा दूसरे और प्रतिनिधि भी समझ नहीं पा रहे थे कि मैं इतना लोगों का ध्यान क्यों खींच रही हूँ।

''तुम यहाँ के गम्भीर मुद्दो के बीच बदलाव लाती रहो।'' मेरे पिता ने उस दिन अख़बार के मुखपृष्ठ पर मेरा फोटो दिखाते हुए उन्होंने मुझे छेड़ा जिसमें मैं भीड़ को हाथ हिलाकर सम्बोधित कर रही थी, ''संभल जाओ... तुम मुसोलिनी जैसी लग रही हो।'' मेरे पिता की यह बदलाव वाली तरकीब ठीक थी। बातें पूरी तरह गुप्त ढंग से हो रही थीं और अन्तरराष्ट्रीय पत्रकारों की अकूत सेना शिमला में बाहर पड़ी थी जिसके पास देख पाने को कुछ नहीं था, सिवाय मुझे देखने को, लेकिन मुझे लगा कि मेरा इस तरह का भव्य स्वागत होना कुछ और संकेत भी देता है।

मैं नई पीढ़ी का प्रतिनिधि हूँ। इसके पहले मैं हिन्दुस्तान कभी नहीं आई। मेरा जन्म स्वतंत्र पाकिस्तान में हुआ। मैं उन जटिलताओं से और पूर्वाग्रहों से मुक्त थी, जो हिन्दुस्तान के बँटवारे के खूँखार माहौल से पैदा हुआ था। शायद लोगों को लग रहा था कि नई पीढ़ी उस कडुवाहट को दूर कर पाएगी, जिसके चलते दोनों देशों के बीच तीन–तीन युद्ध हो गए और बीता हुआ टकराहट–भरा दौर भुलाकर फिर वैसा ही भाई–चारे का माहौल हो जाएगा, जैसा हमारे पुरखों ने देखा है। शिमला की इन स्वागत से भरी सड़कों से गुजरते हुए मुझे लगा कि ऐसा जरूर मुमकिन है। क्या जरूरी है कि दोनों देशों के बीच हमेशा दीवारें खिंची रहे? क्यो नहीं हम, एक–दूसरे आपस में लड़ने वाले यूरोपीय देशों की तरह फिर से मैत्री भाव में नहीं बँध सकते...?

3 जुलाई, 1972 को शिमला समझौते को सुरक्षा परिषद् की निर्विरोध स्वीकृति मिल गयी। विपक्ष ने भी इसको उत्साहपूर्वक स्वीकार किया। शिमला समझौता आज भी लागू है।

बेनजीर के पिता जुल्फिकार अली भुट्टो ने उन्हें राजनीति सभाओं में बोलने के लिए तैयार किया। बेनजीर स्वयं लिखती हैं कि, ''जब वह 70, क्लिफ्टन लौटे, राजनीतिक मीटिंगों का सिलसिला जारी था। मेरे पिता नीचे के कमरे में राजनीतिक नेताओं से बातचीत में लगे रहते थे, मैं अपने कमरे में उर्दू के पाठ ले रही होती थी, ''तुम अपनी उर्दू भाषा को बेहतर बनाओ।'' मेरे पिता मुझसे कहते। ''मुझे जरूरत पड़ सकती है कि तुम मेरी जगह खड़ी होकर बोलो'' हर रोज दो घंटे, अगस्त में, मैं उर्दू अख़बार पढ़ती। उर्दू की शब्दावली अपने ट्यूटर से सीखती। मेरे पिता बीच–बीच में अपनी मीटिंग से ब्रेक के दौरान आकर ट्यूटर से मेरी प्रगति का हाल लेते।

बेनजीर ने खुद से वादा किया कि आशा की वह किरण, जो मेरे पिता ने मेरे भीतर रोपी है, वह हमेशा जिन्दा रहेगी। वह पाकिस्तान के पहले ऐसे नेता थे, जो देश की सारी जनता के लिए बोले थे, केवल फौज के लिए या केवल अभिजात्य वर्ग के लिए नहीं अब यही हमें भी जारी रखना है।

बेनजीर भुट्टो ने अपने पिता के काम पूरा करने का संकल्प किया। वे लिखती हैं, ''अब जब पाकिस्तान को एक दुःस्वप्न ने घेर लिया है, तब मेरे पिता का काम अब मेरा हैं अपने पिता की कब्र के पास खड़े होकर मैंने महसूस किया कि उनकी आत्मा की ताकत तथा दृढ़ता मेरा भीतर जा रही है। मैंने तय किया कि मैं तब तक चैन से नहीं बैठूँगी, जब तक पाकिस्तान में लोकतंत्र की बहाली नहीं हो जाती।

संदर्भ –

1. बेनजीर भुट्टो, मेरी आप बीती, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 2000

2. बेनजीर भुट्टो, डाटर ऑफ द ईस्ट, हमीश हामिल्टन प्रा0लि0 लन्दन, इंग्लैण्ड, 1988
3. बुरहानुद्दीन मुमिन, भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध, प्रिन्टवैल प्रकाशक, जयपुर, 1995
4. राजेन्द्र सिंह गौड़, भारत–पाक सम्बनघ, आजतक, राजस्थानी ग्रन्थागार प्रकाशन जोधपुर, 2002
5. शेख मुहम्मद अली, बेनजीर भुट्टो, ए पॉलिटिकल बायोग्राफी, ओरियन्ट बुक हाउस करॉची, पाकिस्तान, 2000
6. शिव बहादुर सिंह, ''पाकिस्तान शासन एवं राजनीति, गंगा सरन एण्ड ग्रैंडसंस, वाराणसी, 2002
7. स्टेनले ए0 वूल्पर्ट, जुल्फि भुट्टो ऑफ पाकिस्तान : हिज लाइफ एण्ड टाइम्स, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस न्यूयार्क, 1993